

शिक्षण अधिगम सामग्री : छोटे प्रयास, बड़ा प्रभाव

ए कविता

छोटे, खासतौर पर 3 से 6 साल के, बच्चों के लिए एक साधन सम्पन्न आँगनवाड़ी केन्द्र ही अपने-आप में उनके लिए आँगनवाड़ी वर्कर के रूप में कार्य करता है। उन्हें विभिन्न प्रकार की ऐसी रोचक और आकर्षक सामग्री की ज़रूरत होती है जो स्वतंत्र रूप से खोजबीन करने, सीखने, और अभ्यास करने के मौके उपलब्ध कराए। इस लेख में आप पढ़ेंगे कि यदि आँगनवाड़ी केन्द्र में ऐसी सामग्रियाँ हों तो बच्चे केन्द्र की गतिविधियों से सार्थक रूप से किस तरह जुड़े रहते हैं, और आँगनवाड़ी वर्करों के लिए उनके अधिगम में सहयोग देना कितना आसान हो जाता है।



चित्र 1: रोचक टीएलएम निर्माण करती आँगनवाड़ी वर्कर

2021 में जब मैंने सुपरवाइज़र के रूप में पहली बार आँगनवाड़ी केन्द्रों का दौरा करना शुरू किया तब स्थिति काफ़ी निराशाजनक थी। कक्षाएँ सप्ताह में कुछ ही दिन चलती थीं, और वह भी अमूमन केवल आधे दिन के लिए। बच्चे केन्द्रों में नियमित नहीं रहते थे, और आँगनवाड़ी वर्करों को बच्चों का मन लगाए रखने में मुश्किल हो रही थी। मैंने देखा कि आँगनवाड़ी केन्द्रों की दीवारें खाली थीं, बक्सों पर धूल जमी हुई थी, और वहाँ बच्चों के मतलब की सामग्री न के बराबर थी। आँगनवाड़ी वर्कर भी हतोत्साहित-से थे। उपलब्ध संसाधनों से साधारण सामग्री तैयार करना भी उन्हें मुश्किल लग रहा था।

शुरुआत में, मैंने आँगनवाड़ी वर्करों को समुदाय से योगदान लेने के लिए प्रोत्साहित किया, लेकिन उनका जवाब था कि कोई भी मदद नहीं कर रहा है। लोगों से सम्पर्क करना बहुत मुश्किल है। इसलिए हमने एक योजना बनाई और कई नई पहल शुरू कीं।

टीएलएम मेले में आसानी से उपलब्ध सामग्री से सीखना

अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के सहयोग से हमने आँगनवाड़ी वर्करों के लिए टीएलएम (शिक्षण अधिगम सामग्री) मेलों का आयोजन करना शुरू किया। यह काफ़ी प्रभावशाली कार्यक्रम है, और साधारण प्रदर्शनी से कहीं बढ़कर है। मेले में आँगनवाड़ी वर्करों को आसानी से उपलब्ध होने वाली, कम लागत की, और रद्दी तथा अनुपयोगी सामग्री का उपयोग करके शिक्षण सामग्री विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। पहले आँगनवाड़ी वर्कर प्रत्येक स्टॉल में रखी हुई सामग्री का अवलोकन करते हैं, और फिर दिए गए समय में अपने-आप कोई सामग्री बनाते हैं। खुद सोच-विचार कर कुछ नया गढ़ पाने की इस प्रक्रिया से उनमें स्वामित्व की भावना पैदा होती है, और वे सामग्रियों के सार्थक उपयोग की गहरी समझ भी बना पाते हैं।

समय के साथ, इन टीएलएम मेलों ने निरन्तर सीखने की संस्कृति का निर्माण किया और सीखने-सिखाने के प्रभावी व नए उपकरणों के निर्माण में मदद की। जो आँगनवाड़ी वर्कर पहले हिचकिचाते थे, और सोचते थे कि उनमें रचनात्मकता की कमी है, वे अपने साथियों के काम को देखकर प्रेरित हुए। प्रदर्शनी के अवलोकन ने उन्हें दर्शाई गई सामग्रियों को अपने आँगनवाड़ी केन्द्र के लिए भी बनाने, और अपनी ज़रूरत के अनुसार अनुकूलित करने के लिए उकसाया। यह मेला इन आँगनवाड़ी वर्करों के पेशेवर विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ क्योंकि इससे उन्हें अपने आइडिया साझा करने, प्रेरित होने और साझी प्रक्रियाओं को अपने आँगनवाड़ी केन्द्र में दोहराने का अवसर मिला।

लेकिन इस मेले की असली ताकत इस बात में निहित है कि मेले के बाद भी इन सामग्रियों को फिर से कैसे बनाया जाए, और उन्हें अपने बच्चों की ज़रूरत के अनुसार कैसे बदला जाए। कई आँगनवाड़ी वर्कर मेले से प्रोत्साहित हुए, और उन्होंने स्वयं सामग्रियाँ बनाना शुरू कर दिया। किन्तु समय के साथ, अन्य प्राथमिकताओं के कारण उनमें रुचि कम होती गई। गति को बनाए रखने के लिए हमने अलग-अलग रणनीतियाँ अपनाईं जैसे—

- हमने कुछ ऐसे आँगनवाड़ी वर्करों की पहचान की जो स्वाभाविक रूप से ड्राइंग, पेंटिंग या क्राफ्ट में अच्छे थे। उनकी एक छोटी 'टीएलएम टीम' बनाई। उन्होंने अपनी आँगनवाड़ियों में सामग्री तैयार करके उसे व्हाट्सएप समूहों में साझा करना शुरू किया। इससे और अधिक आँगनवाड़ी वर्करों को सामग्री बनाने की प्रेरणा मिली। फिर आस-पास के गाँवों के आँगनवाड़ी वर्कर छोटे-छोटे समूहों में एकत्रित हुए, और सामूहिक रूप से सामग्री बनाई। इस तरह के अनौपचारिक माहौल ने उनके लिए सीखना आसान बना दिया।
- हमने आँगनवाड़ी वर्करों की मासिक कार्यशालाओं में 'अर्ली बर्ड एक्टिविटीज़' शुरू कीं जिनका संचालन अज़ीम प्रेमजी



चित्र 2 : सामग्री निर्माण सीखने और सिखाने का प्रभावी तरीका

फ़ाउण्डेशन के साथियों द्वारा किया गया। इसके लिए आँगनवाड़ी वर्करों से कहा कि वे एक घण्टे पहले आकर टीएलएम तैयार करें। ये टीएलएम उस महीने के पाठ्यक्रम से जुड़ी गतिविधियों के लिए उपयुक्त होने चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि थीम 'फल और सब्जियाँ' है तो वे किसी चयनित फल के चित्र को कई टुकड़ों में काटकर पज़ल कार्ड बना सकते थे, या फलों के प्रकार पर आधारित एक कहानी चार्ट या पोस्टर बना सकते थे। इन आँगनवाड़ी वर्करों ने निर्धारित समय में दो से तीन सामग्रियाँ बना लीं। इस प्रकार वे कार्यशाला से जानकारियों के नोट के साथ-साथ उपयोग के लिए तैयार सामग्री भी लेकर लौटे।

- 25 से 30 आँगनवाड़ियों वाले प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र की सेक्टर बैठकों और कार्यशालाओं में हमने आँगनवाड़ी वर्करों को अपनी-अपनी शिक्षण सामग्री प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित किया। इससे उन्हें यह पहचानने में मदद मिली कि उनकी आँगनवाड़ियों में क्या कमी है। अब वे अपनी ज़रूरतों की बेहतर समझ के साथ वापस लौटे, और संसाधन तैयार करने में जुट गए।

खिलौना बैंक पहल

मासिक ईसीसीई दिवस पर आयोजित अभिभावक बैठक में आँगनवाड़ी वर्करों ने अभिभावकों से अनुरोध किया कि वे अपने घरों से काम में न आने वाले खिलौने, कहानी की किताबें और अन्य खेल सामग्री आँगनवाड़ी में दे सकते हैं। शुरुआत में तो प्रतिक्रिया ठण्डी रही, लेकिन बार-बार अनुरोध करने और उद्देश्य समझाने के बाद कई अभिभावक मदद करने को तैयार हो गए। वे खिलौना कारें, गुड़ियाँ, पहेलियाँ और कहानी की किताबें लेकर आए। बच्चों को भी गर्व हुआ कि उनके घरों के खिलौने आँगनवाड़ी केन्द्र में रखे गए हैं, और उन्होंने खुशी-खुशी उन्हें दूसरे बच्चों के साथ साझा किया।

हर बैठक में आँगनवाड़ी वर्कर अभिभावकों के उदार योगदान की सराहना करते, और दूसरों के सामने उनको धन्यवाद देते।



चित्र 3 : सामग्री निर्माण के ज़ट्टिए सीखने के प्रतिफलों पर चर्चा

उन्होंने आँगनवाड़ी केन्द्र में एक डिस्प्ले बोर्ड पर उन अभिभावकों के नाम भी लिखे ताकि सभी देख सकें। अभिभावकों को महसूस हुआ कि उन्हें आँगनवाड़ी केन्द्र में काफ़ी महत्व दिया जा रहा है तो कई और लोग भी सामग्री के रूप में मदद करने लगे। समय के साथ, अभिभावक और समुदाय के अन्य सदस्य जन्मदिन या सालगिरह जैसे विशेष अवसरों पर आँगनवाड़ी केन्द्र को नए खिलौने भी देने लगे। शुरुआत में, आँगनवाड़ी वर्कर, समुदाय के सदस्यों से मदद माँगने में हिचकिचाते थे, लेकिन समुदाय की सकारात्मक प्रतिक्रिया और बच्चों की खुशी को देखते हुए अब वे समुदाय से आँगनवाड़ी हेतु आवश्यक सामग्री प्राप्त करने के लिए विभिन्न तरीके अपना रहे हैं।

कुछ यादगार कहानियाँ

चार आँगनवाड़ी केन्द्रों में आँगनवाड़ी वर्करों के पद रिक्त थे। वहाँ आँगनवाड़ी सहायिकाओं ने उसी गाँव के अन्य आँगनवाड़ी वर्करों के सहयोग से कुछ सामग्रियाँ तैयार कीं। इन सामग्रियों की सहायता से उन्होंने बच्चों को खेल और गीतों के अलावा कुछ अन्य सरल गतिविधियों में शामिल करना भी शुरू कर दिया है।

एक सहायिका ने मुझे बताया कि शिक्षण सामग्री तैयार करना सिर्फ आँगनवाड़ी वर्करों का काम नहीं है। बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के उन्होंने भी फलों एवं वाहनों के कट आउट बनाए थे, और कम लागत वाली सामग्री का उपयोग करके रंगीन कोलाज बनाए। उनके आँगनवाड़ी केन्द्र की दीवारें इन रचनाओं से जीवन्त हो उठीं।

एक बच्ची सुहानी, आँगनवाड़ी केन्द्र में कम ही बोलती थी, समूह में नहीं खेलती थी, और अपने-आप में ही खोई रहती थी। एक दिन हमने केन्द्र पर वर्णमाला का एक चार्ट प्रदर्शित किया जिसे घर पर ही बनाया गया था। सभी को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि सुहानी खड़ी हुई, अक्षरों की ओर इशारा किया, और उन्हें पहचानने लगी। वास्तव में, वह चार्ट उसकी माँ ने बनाया था, और आँगनवाड़ी केन्द्र को दिया था। दूसरे बच्चे भी उसके बोलने के बाद अक्षरों को दोहराने लगे। उस दिन से सुहानी ज़्यादा सक्रिय हो गई, और अकसर चार्ट का इस्तेमाल करके दूसरों को 'सिखाने' भी लगी। एक साधारण अधिगम सामग्री ने उसके आत्मविश्वास को जगा दिया था।

एक बच्चे के पिता ने एक खिलौना कार लाकर दी और कहा, "सिर्फ मेरा बच्चा घर पर अकेला इसके साथ खेले, इसकी बजाय आँगनवाड़ी में दूसरे बच्चे भी इसके साथ खेलें तो अच्छा होगा।" खिलौना कार पाकर बच्चों को जो खुशी हुई उसे बयान नहीं किया जा सकता।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, इन सभी छोटे-छोटे प्रयासों के सार्थक परिणाम सामने आने लगे।

- चार्ट और पोस्टरों से सजी हुई आँगनवाड़ियाँ जीवन्त हो गईं।
- अधिगम कोने (लर्निंग कॉर्नर) पहेलियों, खिलौनों और कहानी की किताबों से गुलज़ार हो गए।
- बच्चे आँगनवाड़ी केन्द्र में अधिक देर तक रुककर ज़्यादा व्यस्त और खुश रहने लगे।
- आँगनवाड़ी वर्करों ने अपनी रचनात्मकता को पहचाना और आत्मविश्वासी बने। सहायिकाओं ने भी फ़ख़ के साथ अपना योगदान दिया।
- अभिभावक अपने योगदान के ज़रिए बच्चों के सीखने और विकास में भागीदार बन गए।
- पूरे क्षेत्र की 25 आँगनवाड़ियों में अब सीखने का सुव्यवस्थित वातावरण है, और सहायिकाओं द्वारा संचालित आँगनवाड़ियाँ भी यह सुनिश्चित कर रही हैं कि बच्चे आवश्यक अधिगम से वंचित न रहें।
- सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अब आँगनवाड़ी वर्करों के पास नए पाठ्यक्रम को आसानी से लागू करने के लिए विकासात्मक रूप से उपयुक्त थीम-आधारित शिक्षण अधिगम सामग्री उपलब्ध है।

मेरा मानना है

ये बदलाव, जो हम देख रहे हैं, रातोंरात नहीं हुए; ये धीरे-धीरे और थोड़ा-थोड़ा करके हुए हैं। हमने साथ मिलकर आगे बढ़ने का रास्ता खोज लिया। जब मैं इस बारे में सोचती हूँ तो एहसास होता है कि यह यात्रा तो कभी भी किसी बड़े बजट या रेडीमेड किट के बारे में थी ही नहीं। यह तो आँगनवाड़ी वर्करों, सहायिकाओं, अभिभावकों और इस विश्वास के बारे में थी कि उनके छोटे-छोटे प्रयत्न भी मायने रखते हैं।

अंजेली से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

आभार : इस लेख को लिखने में सहायता और मार्गदर्शन देने के लिए के वेंकट साई, अजीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन का आभार।



ए कविता तेलंगाना के संगारेड्डी ज़िले के पटनचेरु प्रोजेक्ट की एक्सटेंशन अधिकारी (सुपरवाइज़र) हैं। उनका मुख्य लक्ष्य शिक्षकों को सशक्त बनाना, सहयोग को बढ़ावा देना, और वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों के लिए उच्च-गुणवत्ता वाली प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा प्रदान करना है।

सम्पर्क : askekavitha14@gmail.com